

Padma Shri



HIS EMINENCE 12th GURU TULKU RINPOCHE

His Eminence Guru Tulku Rinpoche- Ven. Tenzin Thrinley Namgyal is the Abbot of Thubchog Gatsel Ling Monastery in Bomdila, West Kameng District of Arunachal Pradesh. He is the Chairman of Monyul Traditional Culture Development Society and was the Abbot of Tawang Monastery from 2008 to 2016. He is a Buddhist monk who is identified as the 12th incarnation in the lineage of Venerable Merag Lama Lodroe Gyatso who founded Tawang Monastery in 17th century.

2. Born on 3rd November, 1968, His Eminence did his monks' training in Buddhist philosophy and psychology from Dagpo Shedrupling Monastery, Institute of Buddhist Dialectics in Dharamsala, Himachal Pradesh. Rinpoche completed his Doctorate in Buddhist philosophy (Geshe Lharampa) from Drepung Gomang Monastic University, Mundgod (Karnataka). He also has a doctorate in Vajrayana Studies in Mahayana Sanskrit Buddhism from Gyudmed College, Karnataka.

3. Guru Tulku Rinpoche founded Guru Tenpai Dronme Vidyalaya at Shakya Choeling, Labau in West Kameng district of Arunachal Pradesh. The residential institution provides education both in spiritual and modern subjects to the monks and under privileged children from across the region. Thubchog Gatsel Ling Monastery is a prime centre of Dharma in the region. His Eminence travels widely within India and internationally to impart teachings on philosophy and psychology. He has rendered service to His Holiness the 14th Dalai Lama's Office by being one of the Editors of the books and teachings of H.H. the Dalai Lama for publication and archiving. He also served as Translator to translate the teachings of His Holiness into various local dialects.

4. Guru Tulku Rinpoche is a prolific teacher of Buddhism. His relentless service in spreading the message of compassion and wisdom of Lord Buddha through his public teachings, private and public audience and travels, draws the public's great fondness and reverence to Rinpoche. His initiatives in social service have gained great support from the public, local community based organisations and defence establishments in the border state. Through his teachings, Rinpoche has inspired the locals to abstain from hunting the exotic wildlife of the region and engage themselves in conservation through community tree plantation drives.

पद्म श्री



परम पूज्य गुरु टुलकु रिंपोछे

परम पूज्य गुरु टुलकु रिंपोछे—वेन तेनजिन थ्रिनले नामग्याल अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम कामेंग जिले के बोमडिला में थुबचोग गत्सेल लिंग मठ के 12वें मठाधीश हैं। वह मोन्युल ट्रेडिशनल कल्चर डेवलपमेंट सोसाइटी के अध्यक्ष हैं और 2008 से 2016 तक तवांग मठ के मठाधीश थे। वह एक बौद्ध भिक्षु हैं, जिन्हें 17 वीं शताब्दी में तवांग मठ के संस्थापक मेराग लामा लोद्रोए ग्यात्सो का 12वां अवतार माना जाता है।

2. गुरु रिंपोछे का जन्म 03 नवम्बर, 1968 को हुआ। उन्होंने दागपो शेद्रुप्लिंग मठ, इंस्टीट्यूट ऑफ बुद्धिस्ट डायलेक्ट्स धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश से बौद्ध दर्शन और मनोविज्ञान में बौद्ध भिक्षु का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने ड्रेपुंग गोमांग मोनेस्टिक यूनिवर्सिटी, मुंडगोड (कर्नाटक) से बौद्ध दर्शन (गेशे ल्हारम्पा) में डॉक्टरेट किया है। उन्होंने ग्युदमेड कॉलेज, कर्नाटक से महायान संस्कृत बौद्ध धर्म के वज्रयान अध्ययन में भी डॉक्टरेट किया है।

3. गुरु रिंपोछे ने अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम कामेंग जिले के शाक्य चोलिंग, लबाड में गुरु तेनपई द्रोणमे विद्यालय की स्थापना की। यह आवासीय संस्थान भिक्षुओं और पूरे क्षेत्र के वंचित बच्चों को आध्यात्मिक और आधुनिक दोनों विषयों की शिक्षा प्रदान करता है। थुबचोग गत्सेल लिंग मठ इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म का एक प्रमुख केंद्र है। उन्होंने दर्शन और मनोविज्ञान पर शिक्षा प्रदान करने के लिए पूरे भारत में और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक यात्राएं की हैं। उन्होंने 14वें पूज्य दलाई लामा की पुस्तकों और शिक्षाओं के प्रकाशन और संग्रहण के लिए संपादक के रूप में, उनके कार्यालय में कार्य किया है। उन्होंने पूज्य दलाई लामा की शिक्षाओं का विभिन्न स्थानीय बोलियों में अनुवाद भी किया।

4. गुरु रिंपोछे बौद्ध धर्म के विद्वान शिक्षक हैं। उन्हें सार्वजनिक प्रवचनों, निजी और सार्वजनिक व्याख्यानों और यात्राओं के माध्यम से भगवान बुद्ध की करुणा और ज्ञान के संदेश के प्रचार-प्रसार में अथक कार्य के कारण लोगों का भरपूर प्यार और सम्मान प्राप्त हुआ है। समाज सेवा में उनकी पहल को जनसाधारण, स्थानीय समुदायिक संगठनों और सीमावर्ती राज्य के रक्षा प्रतिष्ठानों से बहुत समर्थन मिला है। गुरु रिंपोछे ने अपनी शिक्षाओं के माध्यम से, स्थानीय लोगों को इस क्षेत्र के सुंदर वन्यजीवों का शिकार न करने और सामुदायिक वृक्षारोपण अभियानों के माध्यम से वन्यजीव संरक्षण के लिए प्रेरित किया है।